

जिलेट सफलता

तुमने मुझे सिखाया कि उसे पाने के लिए एक पूरी उम्र भी काफ़ी नहीं होगी।

नतीजों में।

आँकड़ों में।

बाज़ारों में।

तरक़्क़ियों में।

उन मुल्कों में जिनसे मैं गुज़रा।

मेरे विज़िटिंग कार्डों पर छपे ओहदों में।

मैं समझता था वह एक चोटी है।

फिर मैंने जाना कि वह एक परछाईं थी।

मैं जितना तेज़ दौड़ता, वह उतनी ही दूर खिसक जाती।

वह पीछा किए जाने के लिए बनी ही नहीं थी।

सो मैंने पेशा बदल लिया।

मैंने उसके पीछे भागना छोड़ दिया।

मैंने देखना शुरू किया।

लोग।

कहानियाँ।

नाकामियाँ।

हाथ से निकले मौक़े।

औरतें।

ख़ासकर औरतें।

और तब मैंने वह बात समझी जो किसी स्कूल ने मुझे कभी नहीं सिखाई थी।

मुझे रास्ते की ज़रूरत थी।

उसके बिना मैं कभी न समझ पाता।

सफलता कोई फ़तह नहीं है।

वह एक मान्यता है।

वह ली नहीं जाती।

वह मिलती है।

आदमी तय नहीं करता कि वह कब पहुँच गया।

ज़िंदगी तय करती है।

और कभी-कभी ज़िंदगी एक औरत का चेहरा पहन लेती है।

इसीलिए मुझे एक बहुत सीधी-सी बात का शक है।

कि सफलता कहीं मेरा इंतज़ार नहीं कर रही।

कि वह किसी अनुबंध, किसी किताब, किसी इनाम या किसी आँकड़े के पीछे छिपी नहीं है। वह आएगी।

चुपचाप।

बिना किसी एलान के।

बिना ढोल-नगाड़ों के।

एक औरत की ओर से।

जब वह तय करेगी।

और वह कभी इतालवी नहीं बोलेगी।

फर्दिनांदो